

सूरह अन्फाल - 8



सूरह अन्फाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 75 आयतें हैं।

- यह सूरह सन् 2 हिजरी में बद्र के युद्ध के पश्चात् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफ़िरो ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिज़रत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर अक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् 2 हिजरी में मक्के का एक बड़ा काफ़िला शाम से मक्का वापिस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से काफ़िले का मुख्या अबू सुफ़्यान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे काफ़िले की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हजार की सेना निकल पड़ी। अबू सुफ़्यान दूसरी राह से बच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से बद्र के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफ़िरो के बड़े बड़े 70 व्यक्ति मारे गये और इतने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई। इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षायें दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- जो ग़ैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।

- शत्रु से जो सामान (गनीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये खर्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविकता की जानकारी होती है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के हैं। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो^[1] यदि तुम ईमान वाले हो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ
وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَ اللَّهِ
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल काँप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ
قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ
إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ②

- 1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अत्याचार सहन किये। फिर मदीना हिज्रत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्का वासियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने 313 साथियों को लेकर बद्र के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रणवादियों की पराजय हुई। और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिसे इस्लामी परिभाषा में "माले गनीमत" कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिज्रत के दूसरे वर्ष हुआ।

पर ही भरोसा रखते हों।

3. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
4. वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।
5. जिस प्रकार^[1] आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।
6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।
7. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।^[2] परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दे,

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَاذِبُونَ ﴿٥﴾

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٦﴾

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَيِّقَ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

1 अर्थात् यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है, कि अल्लाह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप को युद्ध के लिये निकाला।

2 इस में निर्बल गिरोह व्यापारिक काफ़िले को कहा गया है। अर्थात् कुरैश मक्का का व्यापारिक काफ़िला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

और काफिरों की जड़ काट दे।

8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
9. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गुहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा:) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हजार फ़रिश्ते भेज रहा^[1] हूँ।
10. और अल्लाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।
11. और वह समय याद करो जब अल्लाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और

لِيُحِثَّ الْعَقْلَ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَوِّفِينَ ۝

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

إِذْ يُخَشِّكُمُ النُّعَاسُ أَمْنَةً مِنْهُ وَيُزِيلُ عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बद्र के दिन कहा: यह घोड़े की लगाम थामे और हथियार लगाये जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आये हुये हैं। (देखिये: सहीह बुखारी- 3995)

इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़सवार की आवाज़ सुनी: हैजूम (घोड़े का नाम) आगे बढ़ा। फिर देखा कि मुश्रिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहा: सचच है। यह तीसरे आकाश की सहायता है। (देखिये: सहीह मुस्लिम- 1763)

(तुम्हारे) पाँव जमा^[1] दे।

12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानो!) तुम उन की गरदनो पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।
13. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।
14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफ़िरों के लिये नरक की यातना (भी) है।
15. हे ईमान वालो! जब काफ़िरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।
16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنْ يَمُوتَ مَعَكُمْ فَثَبَّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا سَالِفِينَ فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا
مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوا ۚ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا
زَحْفًا فَلَا تُولُوهُمُ الْأَدْبَارَ ۝

وَمَنْ يُولِهِمْ يُؤْهِمُكُمْ يَوْمَئِذٍ دُبرًا إِلَّا مَتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ
أَوْ مَتَحَرِّفًا إِلَى فِتْنَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ
اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

1 बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र 313 थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे। जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अल्लाह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

प्रकोप में घिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा ईमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने^[1] वाला है।

18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफिरों की चालों को निर्बल करने वाला है।

19. यदि तुम^[2] निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह ईमान वालों के साथ है।

20. हे ईमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتُمْ إِذْ رَمَيْتُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ۝

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْقُرْآنُ وَإِنْ تَذَهَبُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِي عَنْكُمْ فُتُنُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकी जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई। और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

2 आयत में मक्का के काफिरों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखिये: सूरह सज्दा, आयत-28)

रहो तथा उस के रसूल को और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

21. तथा उन के समान^[1] न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।
22. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) है जो बहरे गूँगे हों, जो कुछ समझते न हों।
23. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख है ही।
24. हे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी^[2] (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े^[3] आ जाता है। और निःसंदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।
25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो^[4] कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ سَمِعُوا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۝

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُورُ الْبُكْمُ
الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ
أَسْمَعَهُمْ لَتَوَكَّلُوا وَهُمْ مُغْرَضُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِرَسُولِهِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ
وَأَنَّهُ إِلَهُ تَحْشُرُونَ ۝

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا
مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

1 इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

2 इस से अभिप्रेत कुर्आन तथा इस्लाम है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् जो अल्लाह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता, तो अल्लाह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

4 इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न पनपने दो। अन्यथा जो आपदा आयेगी वह सर्वसाधारण पर आयेगी। (इब्ने कसीर)

26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हें समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।
27. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात^[1] करो, जानते हुये।
28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।
29. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक^[2] बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।
30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफिर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को कैद कर लें। अथवा आप को वध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे,

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَفَّكُمْ النَّاسُ فَأَوَّلَكُمْ
وَأَيُّكُمْ يَضَرُّهُ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ
وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَعَلِمُوا أَنَّ أَمْوَالَهُمْ وَأَوْلَادَهُمْ فِتْنَةٌ
وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا الِّيُمُتُّوْكَ أَوْ
يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ
وَاللَّهُ خَبِيرُ الْمَكْرِينَ ﴿٣٠﴾

- 1 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)
- 2 विवेक का अर्थ है: सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति। कुछ ने फुर्कान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात् अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय^[1] सब से उत्तम है।

31. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं: हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (कुर्आन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।

32. तथा (याद करो) जब उन्होंने ने कहा: हे अल्लाह! यदि यह^[2] तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।

33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।

34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (काँबा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

35. और अल्लाह के घर (काँबा) के पास

وَإِذْ أَتْنَاهُمْ عَلَىٰ أَيْتِنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُتِلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوْ اثْبِتْنَا بِعَذَابٍ الْيَوْمِ ۝

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

وَمَا لَهُمْ آلَ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ إِنْ أَوْلِيَآؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً

1 अर्थात् उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुँचा दिया।

2 अर्थात् कुर्आन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जहल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरती। (सहीह बुखारी- 4648)

इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें? तो अब^[1] अपने कुफ़्र (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

36. जो काफ़िर हो गये वह अपना धन इस लिये खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन खर्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफ़िर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त हैं।

38. (हे नबी!) इन काफ़िरो से कह दो: यदि वह रुक^[2] गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गत हो चुकी है।

39. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि^[3] फित्ना

وَتَصْدِيَّةً فَذُقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُخْشَرُونَ ۝

لِيَبَيِّنَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكَبَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُوءُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ

1 अर्थात् बद्र में पराजय की यातना।

2 अर्थात् ईमान लाये।

3 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुशरिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण सताया, मारा और बंदी बना लिया जाता था। (सहीह बुखारी - 4650, 4651)

(अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

40. और यदि वह मुंह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है?

41. और जान^[1] लो कि तुम्हें जो कुछ ग़नीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय^[2] के दिन उतारी जिस दिन

الَّذِينَ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنْ اسْتَهْوَاهُوا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَأَنْ تَوَكَّلُوا فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاهُمْ ۖ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْقُرْآنِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعِينَ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस में ग़नीमत (युद्ध में मिले सामान) के वितरण का नियम बताया गया है: कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये खर्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और ग़नीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफ़िरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कुँवे में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुँवे के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होते कि अल्लाह और उस के रसूल को मानते? हम ने अपने पालनहार का वचन सच्च पाया तो क्या तुम ने भी सच्च पाया? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहा: मेरी बात

दो सेनाएँ भिड़ गईं और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

42. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का) निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अल्लाह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुतः अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अल्लाह) आप के सपने^[1] में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अल्लाह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।

44. तथा (याद करो उस समय को) जब अल्लाह उन (शत्रु) को

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدِّينِ وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُصْوَى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لَخَتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ وَلَكِنْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ

إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ أَرَأَيْتُمْ كَثِيرًا قُتِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأُمُورِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ التَّفَقُّتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا

तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो। (सहीह बुखारी- 3976)

- 1 इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध से पहले दिखाया गया था।

लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जाते हैं।

45. हे ईमान वालो! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।
46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमजोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।
47. और उन^[2] के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।
48. जब शैतान^[3] ने उन के लिये उन के कुकर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और

وَيَقَالُ لَكُمْ فِي أَنْعَيْنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْقِتْمُفَنَّةُ فَانْشَبُّوا ۖ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَعُتِفْتُمْ ۚ وَتَذَهَبَ رِيحُكُمْ وَاصِيرُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الضَّالِّينَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطْرًا وَرَأَى النَّاسُ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

وَأَذَرْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَ آتِ الْفِتْنَةِ نَكَصَ عَلَى عَقَبَيْهِ وَقَالَ

1 अर्थात् सब का निर्णय वही करता है।

2 इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

3 बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराका बिन मालिक के रूप में आया था। परन्तु जब फ़रिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गई, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफिक तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّهُمْ أَلاَءُ دِينِهِمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फ़रिश्ते (बधित) काफ़िरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना^[1] चखो।

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

51. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

52. इन की दशा भी फिराइनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से

كَذَٰبٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَفَرُوا

1 बद्र के युद्ध में काफ़िरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध से पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तनिक भी इधर-उधर नहीं हुआ। (बुखारी- 4480)

ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुखारी-4875)

पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

54. इन की दशा फिरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फिरऔनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी^[1] थे।

55. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह हैं जो काफिर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

56. यह वे^[2] लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

يَا أَيُّهَا اللَّهُ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَ عَلَيْ قَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُ أَمْرًا يَأْتِيهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

كَذَٰبُ الْإِلَٰهِ فِرْعَوْنُ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَعْرِفْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَكُلَّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرْجَةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝

1 इस आयत में तथा आयत नं० 52 में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मों से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती हैं।

2 इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

57. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।

58. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़^[1] दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।

59. जो काफिर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।

60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ^[2]। जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (खर्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

فَإِمَّا تَنْتَقِبْهُمْ فِي الْحَرْبِ فَمُزِدْهُمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٧﴾

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ
عَلَىٰ سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ﴿٥٨﴾

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِلَيْهِمْ
لَا يُعْجِزُونَ ﴿٥٩﴾

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ
رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَالْآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لِاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
يُوفَىٰ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلَامِ فَاجْعَلْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

1 अर्थात् उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।

2 ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करें, और आक्रमण करें तो अपनी रक्षा करो।

62. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

63. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (खर्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ (निपुण) है।

64. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफी है।

65. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो।^[1] यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफिरों के एक हजार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हजार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हजार पर

وَلَا تُرِيدُ وَأَنْ يَخْذَ عَوْلَكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِبَصِيرَةٍ وَالْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَلَفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلَفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا وَمِائَتِينَ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَإِنَّا لَهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

1 इस लिये कि काफिर मैदान में आ गये हैं और आप से युद्ध करना चाहते हैं। ऐसी दशा में जिहाद अनिवार्य हो जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण से बचा जाये।

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।^[1]

67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आखिरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

68. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थ दण्ड) तुम ने लिया^[2] है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।

69. तो उस गनीमत में से^[3] खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।

70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी है, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज़ (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُنْفِخَ فِي الْأَرْضِ بُرْيَدٌ وَنَعْوَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِيَكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 अर्थात् उन का सहायक है जो दुःख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।

2 यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरी। जब अल्लाह के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्थदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)

3 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये गनीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुखारी- 335 मुस्लिम- 521)

और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिज्रत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिज्रत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

73. और काफिर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

74. तथा जो ईमान लाये, और हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने

وَأِنْ يُرِيدُوا إِخِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ وَإِذَا مَالُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَالُهُمْ مِنْ وَلَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّى يُهَاجِرُوا وَإِنْ اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَبَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ أَتَقَعُلُوهُ تَلْكُنْ فِتْنَةً فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ وَإِذَا مَالُهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ هُمْ

(उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

75. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिजरत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप^[1] हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

وَالَّذِينَ آمَنُوا بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَرْحَامُ بَعْضُهُمْ
أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

1 अर्थात् मीरास में उन को प्राथमिकता प्राप्त है।